व्यापार को कहते है, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये गये वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।" ध्यातव्य है कि इस लक्षण में उच्चारण की स्पष्टता पर तो बल दिया गया है, परन्तु ~~अर्थयुक्तता~~ अर्थयुक्तता एवं प्रतीकात्मकता का निर्देश नहीं दिया गया है। जो भाषा के लिए अत्यावश्यक है।

पं० किशोरी दास बाजपेयी — के अनुसार विभिन्न अंगों में संकेतित शब्द-समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं। कहना होगा कि भाषा की यह परिभाषा अभिव्यक्ति दोष का शिकार है।

डॉ० उदय नारायण तिवारी — ने भाषा के स्वरूप के संबंध में कहा है कि "भाषा मनुष्य के प्रतीकात्मक कार्यों का प्राथमिक एवं बहुविस्तृत रूप है। निश्चय ही यह परिभाषा बहुत स्पष्ट नहीं है जबकि स्पष्टता परिभाषा की अनिवार्य शर्त मानी जाती है।

ए० एच० गार्डीनर — ने प्रयुक्त होनेवाले ध्वनि-संकेतों को 'भाषा' कहा है। उनके शब्दों में "The common definition of Speech is the use of Articulate sound-symbol for the Expression of thought" इस परिभाषा में सार्थक ध्वनियों के